बुझव्वल

-

- करिया गाय करिंगा बाछा ,तड़पी गाय भागिगा बाछा –**बंदूक और गोली**
- एक पेड़ ऐसन भवा ,आधा बगुला आधा सुआ –**मूरी**
- सावन फूल चैत मा बतिया ,तुम बूझौ महतारी बिटिया –**बबूल**
- एक पेड़ सररौआ ,जीपै चील न बैठे कौआ –**धुआं**
- गिरा बद्द से ,उठायिन पांच जने , खाइन बत्तिस जने ,स्वाद पाईन एक जने –**आम ,पांच ऊँगली ,बत्तिस दांत .एक जीभ**
- अंजुरी भर लावा ,घर भरे मा छितरावा –**तारे**
- लाल गाय खर खाय ,पानी पिए मर जाय –**आग**
- दुइ मुंह छोट एक मुंह बड़ा ,आधा मनई लीले खड़ा –**पाजामा ,पैंट**
- राजा कै बिटिया बारह मा पढ़े ,बारह पास एक मा पढ़े –**घड़ी**
- अंगुरी भर के बाले मियाँ ,बित्ता भर कै पूंछ –**सुई धागा**

तुमका कोनव पहेली आवत है , अच्छा बुझाऊ तनी

संरक्षण: श्री संजय सिन्हा, निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ0प्र0 ,लखनऊ।

अवधारणा एवं निर्देशन: डॉ.अजय कुमार सिंह, संयुक्त शिक्षा निदेशक (एस0एस0ए0), राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ0प्र0 लखनऊ।

समन्वय व समीक्षा:

- श्रीमती दीपा तिवारी, सहायक शिक्षा निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ0प्र0 लखनऊ।
- डा0 प्रदीप जायसवाल, प्रवक्ता (शोध), राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ0प्र0 लखनऊ।
- डा0 वन्दना मिश्रा, प्रोग्राम स्टेट प्रोग्राम मैनेजर, केयर इण्डिया, उ0प्र0 लखनऊ।
- श्री मृणाल मिश्रा, सलाहकार केयर इण्डिया, उ0प्र0 लखनऊ।
- **ई-बुक डिजाईन:** श्री आशुतोष आनन्द पूर्व माध्यमिक विद्यालय मियागंज बाराबंकी।

लेखन:

- श्री राम बहादुर मिश्र पूर्व माध्यमिक विद्यालय नरौली, बाराबंकी।
- श्री आशुतोष आनन्द पूर्व माध्यमिक विद्यालय मियागंज बाराबंकी

आडियो- श्रीमती अंजना अवस्थी, ग्राम- रायपुर बाराबंकी।

कवर पेज-: श्री गणेश चन्द्र डे - स्वतंत्र चित्रकार उ0प्र0 लखनऊ।

चित्रांकन एवं डिजाईन:सुश्री प्रतीक्षा चैहान, सलाहकार राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ0प्र0 लखनऊ।

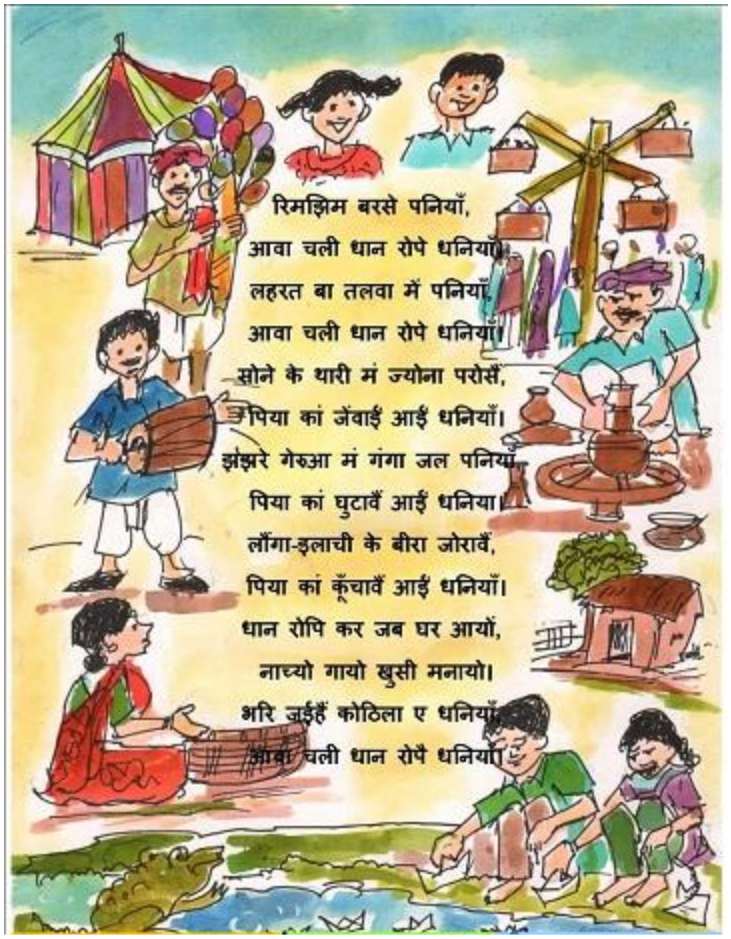
रिमझिम बरसे पनियाँ,
आवा चली धान रोपे धनियाँ।
लहरत बा तलवा में पनियाँ,
आवा चली धान रोपे धनियाँ।
सोने के थारी मं ज्योना परोसैं,
पिया कां जेंवाईं आईं धनियाँ।
झरे गेरुआ मं गंगा जल पनियाँ,
पिया कां घुटावैं आईं धनिया।
लौंगा-इलाची के बीरा जोरावैं,
पिया कां कूँचावैं आईं धनियाँ।
धान रोपि कर जब घर आयों,
नाच्यो गायो खुसी मनायो।
भरि जईहैं कोठिला ए धनियाँ,
आवा चली धान रोपै धनियाँ।